शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

हिन्दी कथा-साहित्य में नारी चित्रण

डॉ. जोगिन्द्र कुमार यादव
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू)
क्षेत्रीय केन्द्र, चण्डीगढ़, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय साहित्य में नारी चित्रण को दर्शाता है। हिन्दी साहित्य में राधा, पद्मावती, राजमती, नागमती, उर्मिला, यशोधरा एवं भिन्न रूपों में नायिका चित्रण उपलब्ध है। हांलाकि नारी चित्रण में काव्य केन्द्र बिन्दु रहा है और साहित्य की इस विधा में उसका चित्रण बहुत समय तक बहुतेरे रूपों में होता रहा है, इसके अतिरिक्त साहित्य की अन्य गद्य विधाओं- उपन्यास, कहानी, नाटक में भी नारी का वर्णन सुन्दर ढंग से हुआ है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में महिला लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है जिन्हें रेखांकित करना इस पत्र का उद्देश्य है। साथ ही उक्त शोध पत्र के माध्यम से आधुनिक महिला लेखिकाओं के योगदान को भी दर्शाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

सृष्टि योजना में नारी का स्थान पुरुष की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण है इसी कारण वह जगत में पूजनीय है। नारी की सहज कोमलता, मनोहरता और उदारता ने उसे देवी का स्थान दिलाया है। आदिकाल से ही नारी पुरुष की सहयोगी रही है। ईश्वरीय सृजन का निर्वहण करने के लिए जितना उत्तरदायित्व पुरुष के विशाल कन्धों पर है उतना ही नारी के कन्धों पर भी। यदि पुरुष प्रकृति देवी का दाहिना नेत्र है तो स्त्री उसका वाम नेत्र है। यदि मानव माया की कर्कशता का प्रमाण है तो नारी उसकी गरिमा है। यदि पुरुष निर्मल और स्वच्छ मन्दाकिनी का प्रवाह है तो स्त्री उसकी चंचलता है। नारी द्वारा हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में सेवा की गई है।

विश्व के साहित्य में, अधिकतर काव्य में, सर्वाधिक अगर किसी विषय का प्रयोग हुआ है, तो मेरे विचार से नारी-चित्रण ही है। काव्य में सर्वमुखी रस श्रृंगार रस है। रसों का रसराज श्रृंगार रस है। नारी का चित्रण या वर्णन करने के लिए श्रृंगार रस का वियोग और संयोग दोनों पक्षों का वर्णन बढ़-चढ़कर हुआ है। नारी के अन्तर्मन में जो मोह लेने वाली शक्ति है, उसी का कारण है, हर विधा में उसका वर्णन। किसी भी महाकाव्य, खण्डकाव्य, प्रबन्धकाव्य या मुक्तक कविता को उठाकर देखें तो नारी चित्रण हर दृष्टि से महत्त्वपूर्ण साबित हुआ है।

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार, "वैदिक साहित्य में उसके रूप-वैभव के उन्मादक प्रभाव की अभिव्यक्ति उस उर्वशी के रूप में हुई, जिसके वियोग में पुरूरवा ने अपने आपको हिंस्र भेड़ियों के सम्मुख डालकर आत्महत्या करने की सोची थी। रामायण में उसके सौन्दर्य की दीप्ति जनक-तनया के रूप में हुई है, जिसकी प्राप्ति के लिए दूर-दूर के नरेश धनुष-यज्ञ में उपस्थित हुए थे।

महाभारत में उसने उस द्रौपदी का रूप धारण किया, जिसके एक कटु हास्य ने अठारह अक्षौहिणी योद्धाओं के नाश का बीज बो दिया। आगे चलकर संस्कृत नाटक-साहित्य में उसने वासवदत्ता, शकुन्तला, बसन्तसेना, मालती, रत्नावली, दमयन्ती आदि के विभिन्न रूपों में अपने सौन्दर्य के जादू एवं भाव-भंगिमाओं की शक्ति का परिचय दिया। गद्य-साहित्य में एक ओर संसार की समस्त साधना, पवित्रता एवं दिव्यता को लेकर वह महाश्वेता और कादम्बरी के रूप में अवतरित हुई, तो दूसरी ओर उससे 'दशकुमार चरित' की काम-मंजरी के रूप में विश्व की समस्त कुटिलता का भी प्रदर्शन किया।"

हिन्दी कथा-साहित्य की अनेक विधाओं में नारी-चित्रण हुआ है। हालांकि उपन्यास एवं कहानी विधा में नारी चित्रण के साथ-साथ स्त्री-विमर्श के विभिन्न पहलुओं को भी कथाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामने लाया है। बीसवीं शताब्दी के अन्त में आधुनिक महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं में स्त्री-विमर्श से जुड़े विभिन्न पहलुओं का यथार्थ एवं सजीव चित्रण किया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र हिन्दी कथा-साहित्य में नारी चित्रण के साथ-साथ महिला कथाकारों के योगदान को भी दर्शाता है। नारी चित्रण के बहाने स्त्री-विमर्श के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते उक्त शोध पत्र में सर्वेक्षण विधि को अपना कर सामग्री एकत्रित की गई है।

हिन्दी कथा-साहित्य में नारी चित्रण

हिन्दी कथा-साहित्य में उपन्यास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपन्यास विधा का उद्भव एवं विकास भारतेन्दु युग से माना जाता है। ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक उपन्यासों के सृजन के साथ-साथ तिलस्मी, ऐय्यारी, जासूसी उपन्यास भी परिस्थितिवश लिखे जाने लगे थे। तिलस्मी, ऐय्यारी, जासूसी उपन्यासों में फ़ारसी प्रभाव के कारण नारी चित्रण व पुरुष का चित्रण एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु एवं कुटिल है।

'प्रेमचन्द' के उपन्यासों में नारी केवल प्रेरक शक्ति के रूप में ही नहीं, बल्कि पुरुष के साथ-साथ हर क्षेत्र में साथी के रूप में चित्रित है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक एवं पारम्परिक, सांस्कृतिक संघर्षों के बीच अधिक निखरती दिखाई गई है। गबन, रंगभूमि, कायाकल्प आदि में नारी के भिन्न रूप प्रस्तुत हुए हैं। नारी प्रेयसी, अर्धांगिनी, मां, बहिन एवं वेश्या के रूप में भी प्रस्तुत है। प्रेमचन्द ने उच्च, मध्यम और निम्न सभी वर्गों की नारियों का चित्रण किया है। 'विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' के 'मां' और 'भिखारिणी' सामाजिक उपन्यासों में आदर्श और यथार्थ का सम्मिश्रण है। 'यशोदा' एवं 'जस्सो' भी महान चरित्रों के रूप में प्रस्तुत हैं। 'वृन्दावनलाल वर्मा' के उपन्यासों में नारी को पुरुष से ऊंचा बताया है। उनकी दृष्टि में पुरुष की शक्ति के पीछे नारी उसकी प्रेरणा रही है।

जैनेन्द्र 'सुनीता' में नारी-पात्रों द्वारा वे चुनाव का काम लेते हैं। इनके सभी उपन्यासों में चरित्र-चित्रण में एक नारी, दो पुरुषों की योजना है। इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में नारी पति परायण न होकर, रुचि से काम लेने वाली स्वतन्त्र नारी-पात्र है। लज्जा, मंजरी, नन्दिनी, शान्ति ऐसे ही नारी पात्र हैं।

'यशपाल' का नारी के प्रति दृष्टिकोण प्रगतिशील साहित्य में नारी की स्वाधीनता का समर्थक है। 'नागार्जुन' के 'रतिनाथ की चाची' में असहाय

ग्रामीण विधवा का चित्रण सफल एवं यथार्थ है। ज्यों-ज्यों स्वतन्त्रता प्राप्ति की ओर समाज अग्रसर होता रहा, उपन्यास में नारी के प्रति दृष्टिकोण एवं मानदण्ड भी बदलते गए। अधिकतर देखा गया है कि नारी की स्वतन्त्रता, समानाधिकार के पक्षपाती सभी लेखक रहे हैं।

हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों ने भी अपनी रचनाओं में नारी पात्रों के माध्यम से नारी-विमर्श के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। 'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास में लेखिका ने उड़ीसा के लोगों सामाजिक एवं धार्मिक जीवन का बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया है। कोणार्क और पुरी के पौराणिक महत्त्व का आज के धार्मिक विश्वासों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए इस उपन्यास में चंद्रकांता ने जिस पक्ष का खुलासा किया है, वह है वहां के सामाजिक परिवेश में नारी का महत्त्व और उसकी हैसियत।

कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति बहुत आदिम है। विश्व के प्रायः सभी देशों के उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थों में कहानी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारतीय साहित्य में वैदिक साहित्य से लेकर पुराणों-उपनिषदों, जातक कथाओं और पंचतंत्र आदि में कहानी के पुराने स्वरूप को देखा जा सकता है। हांलाकि हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास भी 1857 के आस-पास माना जाता है लेकिन 'प्रेमचन्द' से ही 'कहानी-क्षेत्र' में नया दौर आया। इनकी कहानियों में नारी पात्र एवं पुरुष पात्र साथ-साथ ही चित्रित होकर, सफल हुए हैं। पहले पहल उनकी कहानियों में आदर्शवादी, परम्परावादी, यथार्थवादी दृष्टिकोण उपलब्ध है लेकिन समाज में परिवर्तन के साथ-साथ साहस और अधिकार की रक्षा की मांग भी स्त्री पात्रों में व्याप्त नज़र आई। रानी सारेधा, पंचपरमेश्वर की खाला, बड़े घर की बेटी आनन्दी ऐसे ही यथार्थवादी पात्र हैं जिनमें आदर्श, शिवम एवं सुन्दरम की भावना निहित है।

'निराला' के कहानी संग्रहों में नारी स्वतंत्रता की बात प्रबल हो, अभिव्यक्ति का साधन बनी है। नारी के प्रेम, शिक्षा, सुसंस्कृत रूप दिखाने का प्रयास रहा है। 'भगवतीचरण वर्मा' की कहानी में नारी पुरुष पर आश्रित एवं त्याग की मूर्ति के रूप में प्रस्तुत है। 'पराजय', 'मृत्यु' में आधुनिक समाज की नारी का चित्रण हुआ है।

'यशपाल' की कहानियों में जीवन के संघर्ष का चित्रण अधिक हुआ। मध्यवर्गीय समाज में नारी को शोषण की वस्तु माना और नारी की मुक्ति के लिए उन्होंने समस्त कहानी कला का प्रयोग कर डाला। 'अज्ञेय' की कहानियों में प्रेम की समस्या के मध्य नज़र युवती और युवक के प्रेम, सैक्स आदि का मनोवैज्ञानिक चित्रण वैयक्तिक धरातल पर दिखाई देता है। इसी प्रकार 'उपेन्द्रनाथ अश्क' की कहानियों में आधुनिक समाज की बदलती छवि के अन्तर्गत कुछ कहानियों में 'सैक्स' का तीखा स्वर सुनाई देता है।

'प्रसाद' की कहानियों में कल्पना के भाव के साथ-साथ भावों के भिन्न रंग प्रस्तुत कर सुन्दर एवं सफल कहानियां लिख नारी-पात्र को उजागर किया है। 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाश दीप', 'आंधी', 'इन्द्रजाल' भिन्न कहानी संग्रहों में यथार्थ, रोमांटिक कलात्मक दृष्टिकोण, भावुकता, गम्भीरता व्याप्त है। 'प्रसाद' के नारी पात्रों में ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, काल्पनिक तथ्य भी मौजूद हैं। प्रसाद की नारी भावुक, स्नेहमयी, श्रद्धा-त्याग की मूर्ति एवं अन्य उदार रूप में दिखाई देती है। इसके विपरीत कुछ नारी-पात्र दुर्बल, विलास

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

प्रिय,ईर्ष्या, स्वार्थ, पाशविक वृत्तियों में विलीन भी दिखाई देते हैं। नारी के प्रेम का अत्यन्त उज्जवल रूप सृजित किया है प्रसाद ने अपनी कहानियों में। प्रेम उनका देश के प्रति, पिता के प्रति एवं पति के प्रति और सबसे महत्त्वपूर्ण प्रेमी के प्रति कर्त्तव्यपरायण है।

प्रमुख महिला कथाकार एवं स्त्री-विमर्श

उत्तर आधुनिक युग में उभरते विमर्शों के संजाल में एक विमर्श है- स्त्री विमर्श, जो मानवीय संवेदना के साथ मानवता के धरातल पर सही दृष्टि द्वारा समाज में स्त्री के आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक, भाषिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का अवलोकन करते हुए विभिन्न समस्याओं को मुखरित कर रहा है ताकि स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु इन समस्याओं का निराकरण किया जा सके। आज लिंग-भेद, महिलाओं पर हो रहे हिंसा, महिला स्वास्थ्य के साथ ही पूंजीवाद एवं भूमंडलीय व्यवस्था के तहत व्यापक फलक पर खुले आम स्त्री गरिमा का हनन किया जा रहा है। इन सब पर स्त्री-विमर्श के तहत समकालीन महिला लेखन अपनी बात रख रहा है। समकालीन महिला लेखन वैचारिक क्रांति की ओर इशारा कर रहा है जिनकी मांगे स्पष्ट हैं- स्त्री मनुष्य है उसे मनुष्य ही माना जाए।

स्त्री का समाज में अपना अस्तित्व है अपनी अस्मिता है और इसे नकारने की कोशिश सर्वथा अमान्य है, मात्र अमान्य ही नहीं यह तो मानवाधिकार हनन के समान है। अंतिम दशक में महिला कथा लेखिकाएं नारी के विविध पक्षों को मार्मिक तरीके से उद्घाटित करती हैं।

चन्द्रकांता कृत 'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की नायिका 'कुनी' एक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत है। वह पारम्परिक अन्धविश्वासों में फंसी हुई है। कुण्डली के योग के कारण उसे समय पर योग्य वर मिलना मुश्किल है। उसे अपने बारे में खुद निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। अपने बारे में कुनी कहती है- "मैं बत्तीस वर्षों से कई शापशरों से विंधी रही हूं। रणशील परिवार में जन्म लेने का शाप, घर की बड़ी बेटी होने के शाप या शायद अपने यहां महज उम्रदराज लड़की होने का शाप ही काफी है, अंधी खोहों में बन्द होने के लिए।"

उपन्यास की नायिका ऐसे वातावरण से बाहर निकलना चाहती है लेकिन जब वह खुद के बारे में निर्णय ले सके तब तक समय बहुत आगे बढ़ गया होता है और वह बहुत पीछे छूट गई होती है। वह अपना परिचय देती हुई कहती है कि "मैं कुनी मिश्रा, श्रीयुत सनातन मिश्र की बड़ी बेटी। रणशील परिवार की सुशील सगुणी कन्या, तब भी थी आज भी हूं शायद। मुझे बनाने वाले मेरे संस्कार, मेरा परिवार, मेरा परिवेश। माँ की खामोश सिखौवलें, दादी की प्यार भरी हिदायतें कहानियां, बप्पा की सुझायी लीक-लीक पगडंडियां जिन पर मुझे आंख मूंदकर चलना था और मैं चलती रही, काफी देर तक। बोलना, मुंह खोलना मैंने नहीं सीखा क्योंकि इसकी गुंजाइश वहां नहीं थी या शायद किसी को एहसास ही नहीं था कि ऐसी गुंजाइश भी हो सकती है। मैं बोली जरूर पर दूसरे के लिए अपने लिए पहली बार मैं तब बोली थी जब प्रभा मौसी अनिरुद्ध से विवाह का प्रस्ताव लेकर आयी और भाई-भाभियों ने बिना मेरी राय जाने रद्द करना चाहा।"

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

अपनी ढलती जवानी के समय 'कुनी' सिद्धार्थ नामक एक युवक से प्रेम करती है। उसे सुख-दुःख का सहभागी बनाती है। उसके साथ रहकर वह बहुत खुश रहने लगती है। लेकिन भाग्य की बिडम्बना ही थी कि सिद्धार्थ ने अस्पताल में इलाज के दौरान किसी नर्स के साथ शादी कर ली थी। इस बात का पता जब कुनी को चलता है तो बह अत्यधिक दुःखी होती है। 'कुनी' की मौसी कुछ समय बाद एक शादी का प्रस्ताव लाती है। लड़का विधुर था। वह दो बच्चों का बाप था। परिस्थितियों को भांपते हुए 'कुनी' डॉ. अनिरुद्ध दास से शादी करने के लिए तैयार हो जाती है।

'कुनी' का जीवन पारंपरिक मर्यादाओं और पुराने मूल्यों के तहत जीवन यापन करने के लिए मजबूर हो गया है। उसका जीवन एकदम आंतरिक द्वंद्व में उलझा हुआ है। यथा- कुनी के जीवन और चरित्र में अंतर्द्वन्द्व था। वह किसी खास जगह टिक नहीं पाती थी। अतः वह स्वयं अपनी दृष्टि में अधूरी लगती थी। उपन्यास में वह एक समर्पित नारी के तहत थक हारकर डॉ. अनिरुद्ध से कहती है कि- "मैं कोई कंधा तलाशने लगी थी। जिस पर सिर रखकर अपने मन का बोझ हल्का कर सकती।"

चित्रा मुद्गल आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की बहुचर्चित, सम्मानित कथाकार हैं। उनका 'आवां' नामक उपन्यास हिंदी साहित्य की कालजयी कृति मानी जाती है जिसका प्रकाशन सन् 1999 ई. में हुआ। स्त्री विमर्श का महाआख्यान यह उपन्यास सहस्राब्दी का पहला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान 'इंदु शर्मा कथा सम्मान' लंदन और के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा 'व्यास सम्मान', हिन्दी अकादमी दिल्ली का 'साहित्यकार सम्मान' तथा उत्तर प्रदेश सरकार का 'साहित्य भूषण सम्मान' से अलंकृत किया जा चुका है। प्रख्यात आलोचक शिवकुमार मिश्र ने इसे 'औरत के वजूद से जुड़े सवालों का दहकता-सुलगता दस्तावेज और एक विचारोत्तेजक उपन्यास माना है।' डॉ. विजेन्द्र नारायण सिंह के अनुसार यह उपन्यास पूंजीवादी व्यवस्था में नारी की नियति का सच है। उपन्यास नारी प्रधान है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने पढ़े लिखे लोगों को यह बताना चाहा है कि जो लोग आज भी दिहाड़ी पर जी रहे हैं उनकी स्थिति क्या है? वे कैसी-कैसी यातनाओं से गुजर रहे हैं, उनकी पीड़ा क्या है।

चित्रा मुद्गल का 'आवां' उपन्यास तीन प्रकार की सृष्टियों का उपन्यास है। पहला है कामगार आघाड़ी जो एक ट्रेड यूनियन है और पूरी रचना में हर अध्याय में यह कामगार अघाड़ी इस प्रकार हस्तक्षेप करता है जैसे वह पूरे उपन्यास की चेतना हो। दूसरा स्त्री संगठन है 'श्रमजीवा' पापड़ बेलने वाली या घरेलू उद्योगों की संचालित करता यह संगठन। तीसरा संगठन है- जोगी री जो वेश्या जिन्हें अधिक सभ्य भाषा में सैक्स वर्कर का संगठन है। हिन्दी में ट्रेड यूनियन और श्रमिकों पर यह पहला उपन्यास है, जिसमें लेखिका ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर न केवल उनके मिल मालिकों और पूंजीपतियों के साथ संघर्ष को चित्रित किया है, बल्कि उनकी आपसी घाती, ईर्ष्यागत राजनीति को भी प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में उन्होंने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि भारतीय मजदूरों को भीतर और बाहर दो फ्रंटों पर लड़ना पड़ता है। अपने नेताओं के साथ मालिकों के खिलाफ और विभिन्न नेताओं के साथ आपस की भीतरघात लड़ाई में।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

'प्रभा खेतान' कृत 'छिन्नमस्ता' उपन्यास प्रिया के जीवन के माध्यम से स्त्री विमर्श के कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नों से साक्षात्कार करवाता है। इस उपन्यास में लेखिका ने प्रिया के माध्यम से नारी की स्वतंत्रता एवं स्वच्छंदता का वास्तविक जीवन अंकित किया है। 'प्रिया' एक ऐसी नारी का प्रतीक है जो सदैव शोषण का शिकार होती है। चाहे समाज की जर्जर मान्यता हो या पुरुष की आदिम भूख। लेकिन प्रिया इस उपन्यास में टूटती नहीं है बल्कि शोषण करने वालों के लिए एक चुनौती बन जाती है और आत्मबल से नये पथ का अनुशरण करती है।

प्रिया का परिवार जिस पितृ सत्ता वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है वहां पैसे की कमी नहीं, करोड़ों का व्यवसाय है, हीरे जवाहरात हैं, मौज-मस्ती के लिए विदेश यात्राएं हैं, महंगी शापिंग के अवसर हैं। कथा नायिका प्रिया के पिताजी श्री सांवरमल जी कलकत्ते के सुप्रसिद्ध एवं समृद्धशाली मारवाड़ी हैं। प्रिया के छः भाई-बहन हैं। प्रिया सबसे छोटी है। वह अपने ही घर में उपेक्षित होकर जीवन यापन करती है और भाई-बहनों के बीच मिलिट्री घोड़ा आदि उपनामों से विभूषित होती है। मां उससे हमेशा घृणा का व्यवहार करती है। इतना ही नहीं दस वर्ष की अवस्था में ही वह अपने बड़े भाई, कुछ ही वर्षों बाद नौकर एवं 22 वर्ष की अवस्था में अपने ही दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर की कामवासना का शिकार होती है। प्रिया को परिवार में अगर कोई स्नेह करता है तो वह केवल दाई मां। प्रिया का विवाह करोड़पति घराने में नरेन्द्र नामक युवक से होता है। नरेन्द्र का व्यक्तित्व मांसलोलुप, कामुक, अहंकारी, असंवेदनशील एवं प्रताड़ित करने वाला था। वह किसी भी स्त्री को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता, बल्कि स्त्री को वह कामवासना पूर्ति का माध्यम मात्र मानता है। करोड़पति घराने की बहू होते हुए भी प्रिया एक-एक पैसे के लिए तरसती है। ऐसे में जब प्रिया किताब खरीदकर लाती है तो नरेन्द्र कहता है- "इंटलेक्चुअल शोआफ- बेकार पैसा फूंकती हो क्यों नहीं नेशनल लाइब्रेरी से लाकर पढ़ती। कमाकर लाओ तो पता चलता।" इसके अतिरिक्त जब नरेन्द्र के घर में कोई विशेष पार्टियां आयोजित होती थीं तो प्रिया को अपने घर पर मेज आदि को सजाना-संवारना और अपने आपको भी व्यवस्थित करना पड़ता था। तभी नरेन्द्र कहता है कि- "प्रिया वह फिरोजी फ्रेंच शिफान पहनना जो अबकि पैरिस से लाया था और सुनो साथ में वह फिरोजी वाला सेट भी। लोग देखें तो हमारी श्रीमती का रौब, लेकिन प्रिया को तैयार होकर नीचे उतरते-उतरते नरेन्द्र टोक ही देता, यह क्या? वह कार्टियार घड़ी नहीं पहनोगी ? आचार डालोगी। ....और कितनी बार कहा बालों को जरा स्टाइल में संवारो क्या यह पोनीटेल लटका लेती हो।" नरेन्द्र प्रिया को सदा व्यंग्यात्मक शैली में ही बात करता है। वह केवल उसे शो पीस समझता है। उसका वैवाहिक जीवन सुखमय न होकर दुःखमय हो गया है। दोनों के संबंध में अहं का टकराव होता है। अन्ततः प्रिया हमेशा के लिए नरेन्द्र का घर छोड़ देती है और खुद को व्यापार में लगा लेती है।

'क्षमा शर्मा' का 'परछाई अन्नपूर्णा' उपन्यास कामकाजी स्त्रियों की समस्याओं को रेखांकित करता है। इस उपन्यास की भूमिका में ही क्षमा शर्मा इस प्रश्न को उठाती है कि-"स्त्री पैसा कमाने के लिए नौकरी करती है या आत्मविकास के लिए।" आर्थिक आवश्यकता और आत्मविकास के प्रश्न के साथ ही घर से बाहर पैर रखने वाली

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

स्त्री 'घर और बाहर' की जिन समस्याओं का सामना करती है, उन समस्याओं पर बहस भी इस संदर्भ में अपने लिए करती है। इस उपन्यास में जहां कुछ प्रश्न स्वतन्त्रता और सुरक्षा से जुड़ते हैं वहीं दूसरी ओर स्त्री संदर्भ में घरेलू श्रम और आर्थिक स्वावलंबन से भी सहज में जुड़ जाते हैं। यह उपन्यास घरेलू हिंसा और काम के स्थान पर स्त्री के मानसिक व यौन उत्पीड़न पर चर्चा को केन्द्र में लाता है। समग्र रूप से 'परछाई अन्नपूर्णा' कामकाजी स्त्री को संपूर्णता से स्त्री के विचारों को प्रस्तुत करने का विमर्श है। यह कामकाजी स्त्रियों के विविध पक्षों का उद्घाटन उनकी समस्याओं का संकेत करता है।

निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी का अंतिम चरण भारतीय इतिहास का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मोड़ है। अंतिम दशक के महिला उपन्यासकारों ने पूर्व समय से अधिक समाज की विविध समस्याओं को अपनी रचनाओं में यथार्थपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। जिन समस्याओं में स्त्री सम्बन्धी समस्याएं तो प्रधान भूमिक निभाती ही हैं पर इसके बावजूद साम्प्रदायिक दंगों, राजनीतिक भ्रष्टाचारी समस्या, बेरोजगारी की समस्या, बच्चों के मनोविज्ञान, आर्थिक विपन्नता, धार्मिक असहिष्णुता, धार्मिक उन्माद, पारिवारिक विघटन, सांस्कृतिक बिखराव, मूल्य संक्रमण आदि विविध विषयों पर भी महिला उपन्यासकारों ने गहनता से विवेचन विश्लेषण कर अपने विशिष्ट उपन्यासों में यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। साहित्य में कहानी एवं उपन्यास गद्य विधाओं में आधुनिक युग में महिला लेखिकाओं ने बड़ी संख्या में योगदान दिया है। मन्नु भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, कृष्णा अग्निहोत्री, शशिप्रभा शास्त्री, रजनी पाणिकर, चन्द्रकान्ता सोनरिक्सा, मेहरूनिस परवेज़, मालती जोशी, ममता कालिया, सूर्यबाला आदि का योगदान उल्लेखनीय रहा है। आज के शिक्षित समाज में आत्म सम्मान, आत्मरक्षा, स्वत्व का सम्मान आवश्यक है। नारी-मन की सोच का सुन्दर उद्घाटन आधुनिक महिला उपन्यासकारों एवं कथाकारों ने किया है। आज के शिक्षित समाज में आत्म सम्मान, आत्मरक्षा, स्वत्व का सम्मान आवश्यक है। नारी-मन की सोच का सुन्दर उद्घाटन आधुनिक महिला उपन्यासकारों एवं कथाकारों ने किया है। अन्ततः नारी का साहित्य से गहरा सम्बन्ध रहा है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से। नारी का स्वयं भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है, परिवार में और समाज में। इसी सराहनीय योगदान के तले नारी के भिन्न रूपों का चित्रण अनेक साहित्यकारों ने अपनी कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास में किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गणपतिचन्द्र गुप्त, साहित्यिक निबन्ध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 1971, पृ. 566

2. डा.शिव कुमार शर्मा, हिन्दी युग और प्रवृत्तियां

3. डा. रामसजन पाण्डेय, हिन्दी साहित्य का इतिहास

4. डा. कीर्ति केसर, हिन्दी साहित्य: इक्कीसवीं सदी की चुनौतियां

5. कीर्ति केसर, स्वातन्त्र्योत्तर कहानी का समाज-सापेक्ष अध्ययन

6. अनिल गोयल, हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका

7. सुरेश सिन्हा, हिन्दी उपन्यास

8. श्रीराम शर्मा, आधुनिक हिन्दी उपन्यास: दार्शनिक चेतना

9. डॉ.आशा गुप्ता, नवम दशक की हिन्दी महिला कथाकारों की नारी चेतना।

10. शंकर प्रसाद, सामाजिक उपन्यास और नारी-मनोविज्ञान

11. चंद्रकांता, अपने-अपने कोणार्क, पृ.सं. 11 एवं 21

12. नगेन्द्र चैरसिया (वागर्थ पत्रिका, अक्तूबर 1996), पृ. सं. 11

13. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पृष्ठ संख्या 140 एवं 154

14. क्षमा शर्मा, परछाई अन्नपूर्णा, पृष्ठ संख्या 3